

DPN 5444

Title: आग्निकुण्ड पाद स्थापन विधि / AGNIKUNDA PĀDA STHĀPA-
NA VIDHI

Run. No. 6135

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि VIDHI
Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *नेपालभाषा निदेशावली / Newa direction*

Size in cms. 12 x 22.5

Folios 7

Lines (in a page) 10

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१. ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॥ ॐ अग्नि कुण्ड पाद स्थापन विधि ॥ अतः पाद वि ४ पंक्तः, पंक्त ५
तय, चा गोडा ५, दाहिने, वास्तुविषये, फोहोत्प्रेषण, न्या परधु ॥ का ॥ वसु ॥ कु ॥
अष्टादि ॥ अममना, श्री अमनोदापनाग्नि कुण्ड स्थापन निमित्तार्थ ॥

Ending

अभिषेक, चंद्रमार्ग ॥ स्नान ॥ आशीर्वाद ॥ पूर्णचंद्र ॥ साहिबाय ॥ पादस्नान विधि ॥ १॥

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॥ अथ अग्निवृक्षुयादस्त्रायनविधिः ॥ अथ पाद ४
 याचन याचन ५ तय चागमज ५ दाखि वासुखि पात हाणि कील न्याय
 वशु ॥ का ॥ वंसुन ॥ वृन ॥ ॥ कन सार्वन विधि ॥ ताहाया कनस माच चा
 कनस वलि मानका ॥ तग दो दिन काल साधन ॥ नकर्स कुं द्याल के आया
 दन वलि वियाव ॥ कुं अयक ॥ कुं सुल वधान रिंठ मरिं ग साय ॥ साक्रिया
 यमाल ॥ ॥ अयादि ॥ यरुमानां श्री अूनका यायानाग्निवृक्षुस्त्रायननिमि
 लर्थ ॥ पूष्य राजनं समर्पयामिनमः ॥ यथादवस्य सार्ग ॥ नत्ना मधी ॥ सिः
 द्विनमु ॥ यथावान ॥ सूर्यार्चवाक्क (धन ॥ पुन नमस्कात्र ॥ नास ॥ अर्चपागुयूः
 जा ॥ आत्मपूजा ॥ आसनपूर्वदत्ता ॥ ॥ दानार्चनं ॥ ॐ नत्वा यामि ॥ ॐ दवः
 सत्वा सुविगु ॥ ॐ ग धं नात्वा ग धयति ॥ ॐ हृदस्य त अग्नि दय्या ॥ ॐ वत्ता वि

ॐ गङ्गाया ॥ ॐ द्वात्रिंशती ॥ ॐ दिनध्वजरी ॥ ॐ सकमयय ॥ ॐ वक्रयज्ञानं ॥
 ॐ विष्णुत्रयमसि ॥ ॐ नमः शुभवाय ॥ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ आधनः
 मकयत्यादि ॥ ॥ त्रिआश्रित ॥ ॐ नमः ॥ ॐ वयव ॥ ॐ श्रामालखि ॥ ॐ श्रिजि
 कलनी ॥ ॐ यशश्चयश्चयस्वनी ॥ ॐ ॐ मन्मगजयमून ॥ ॐ सितासितसलिरु ॥
 ॐ उदकत्रयित्रीर्ध ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॥ ॐ श्रकृष्ण १० ॥ ॐ गौरीनमिन्दु १० ॥
 ॐ श्रुष्टेवा ॥ ॐ श्रुष्टमासत्यादि २१ ॥ सद्ययुजा ॥ ॐ गोवलिपूजनं ॥
 ॐ गङ्गातीर्था ॥ ॐ यातवदस ॥ ॐ ॐ मातृदाय ॥ ॐ द्युतयुतयवाने ॥ ॐ नः
 मातृसुसा ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॥ अयविसखनमात्रका ॥ ॥ द्रवापिखापि
 खा ॥ ॐ समरयदया ॥ ॥ गङ्गा ॥ ॐ गङ्गासकृद्वलयुजा ॥ ॐ नमः गङ्गा ॥ ॐ
 श्रुष्ट्याता ॥ ॐ यातवदस ॥ ॥ कवायुजनं ॥ ॐ अनविलम्बमात्रका ॥ ॥ ॐ श्रु
 न।

ॐ कमीन्द ॥ ॥ कसकन ॥ ॐ समित ॥ ॥ सिद्धमूढ ॥ ॐ श्रीश्वतसङ्की ॥
 वक्रुस्वस्ति यययश्च, पादध्वादादमदवता, अष्टोभानि यकूर्वाति, मरु
 पाटकनाभनं ॥ ॐ स्वास्तिन ॐ ॐ ॥ ॐ ययश्चयिद्यां ॥ ॐ विष्णुत्रयमसि
 मसि ॥ ॐ अग्निर्द्वतावा ॥ ॐ योऽभानि ॥ ॥ धूप ॥ ॐ धूपसि ॥
 दीप ॥ ॐ गङ्गासि ॥ ॥ रुल ॥ ॐ यारुल नि ॥ ॥ नेत्रय ॥ ॐ श्रु
 यत ॥ ॥ यतिर्वा ॥ ॐ मना इति ॥ ॥ जाय ॥ ॐ साग ॥ ॐ सद्भानि
 निवयसयनमसद्भानि ॥ ॐ सानन्दसूत्रनायकस्य रगवान, स
 पूर्वकामयदं वागी ॥ ॐ वदसु वाग्वददं वा मादिचक्रस्वर्वाधी ॥
 कविनामकृष्टरयहाम् ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥
 पूजा ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥ ॐ श्रुष्ट्याता ॥

१. कुं गी २ गलसायनमा ॥ अथ वासुदेवादि विधिर्लोक ॥ ३. म, नासाक, अकृत
 लीख्यतनहाय ॥ रुमिदजायाय ॥ आधात्राकयत्यादि ॥ ध्यान ॥ स्रुः
 योयमदावृथ, पुदालंकात्ररुषिर्गा। तन्मयां तानिधावस्थां, धात्वासं
 पूजयन्मही ॥ सर्वदेवमयं वासु, यत्र च तत्र पूजयन् ॥ वद ॥ कुं अ
 स्यात्तस्मिन् विद्यनसं नृमन् तकेतुत्र सवर्षा, सिसेनुवधानभा
 मायुधिया ॥ ३. यन्त्राशनासि यमनाश्रवासिध्वनः ॥ रुषेः
 त्वाकमायत्तायै त्वाधायत्ता ॥ वाक्कटास्यं, हार्मि, किलयाथानस
 मध्वृत्तदधिद्वग्नीरवपुषे, यतनवाले ॥ गायकायउत्त, जिन
 किलस्वाय ॥ आग्नयादिन ॥ न्यायत्रयुन तायकिलियाताउ, धात्र ॥
 कुं विगन्तुततलेनाम, लाकयालायकासदा, अस्मिन् गुरुनिष्ठम्

आयुर्वलकवा ॥ सदा ॥ मनु ॥ १. कुं स्कं कुं ऊं दूं स्वाहा ॥ शिवाय नमः ॥
 कीलसंनयिधात्र, यिनमाल ॥ ह्रीं सिकिलि, य ३२ दं ध्यात ॥ यद्यि ४ धि
 ध्यात ॥ विधिर्थां शिवाय नमः ॥ ध्यातर्धं दाव ॥ आग्नयादि ॥ वलि विथ
 ॥ वलिर्मज ॥ कुं अग्निस्था ॥ ३. यमवस्था यवान्य तत्समाप्तिता ॥ वलिर्नयः
 ययक्ता मि, यत्तभादनमूरुम ॥ १ ॥ कुं नैमगाधियति, यैव, नैमगाध
 वनाकमा, वलिर्नयः ॥ ययक्ता मि, यैव गुरुम निता ॥ २ ॥ कुं नभावा
 यत्राजं त्या, यवान्य तत्समाप्तिता ॥ वलिर्नयः ॥ ययक्ता मि, यैव गुरुम
 भादन ॥ ३ ॥ कुं नृदय, यैव सर्वस्था, यवान्य तत्समाप्तिता ॥ वलिर्नयः ॥ य
 यक्ता मि, यैव नृसुमनादु का ॥ ४ ॥ ववसठि के आदयक ॥ ३४ ॥ न्या
 सादिष्टजन ॥ कुं शिवाये नमः ॥ कुं य, आवती नमः ॥ ३. कान्तोय ॥ कुं

सुखियोये॥ॐ विमलाये॥ॐ मित्राये॥ॐ स्वभावाये॥ॐ शान
 ॐ॥ॐ वताये॥ॐ शीघ्रते वद॥ॐ वरुणा वसु॥ॐ धन्ये नम॥ॐ धन्या
 ॐ॥ॐ विमलाये॥ॐ मित्राये॥ॐ वताये नम॥ॐ गदाये॥ॐ
 निभाये॥ॐ विदुमाये॥ॐ विरुव॥ॐ वद॥ॐ ग्रामा लखी॥ॐ यतये
 वसु॥ॐ लंज विदुदा॥ॐ धन धं दाव काथा सयुजन याय॥ॐ शीघ्र ना
 दि॥॥ॐ शीघ्र नाय नम॥ॐ यता कृते न वर्य नम॥ॐ अरि त्वा यत्र
 ॐ यज न्याय॥ॐ लल लखी॥ॐ महां ॐ लो ज १ डा ज सा य ज न्या वृष्टि
 माई ॐ व॥ॐ मे व सस्ये वा वृ॥ॐ ज या य॥ॐ यता का॥ॐ म म्मा नि त
 ॥ॐ ला य॥ॐ वत॥ॐ सजा घा ॐ नु स ग ॥ॐ आदि त्वा॥ॐ धूम वि तान
 ॐ आ न ॐ डा रि वि द॥ॐ सखा य॥ॐ गध मा ॐॐ क ल्ला स थो॥ॐ रू ग

3

विगते मीतना वदते न युनाउमा॥॥

य॥ॐ मां सादन॥ॐ आमु १ मि गाना॥ॐ माखा य॥ॐ यकि मां स॥ॐ य
 क नम न सा वयं॥ॐ यत दृ व दि ग या॥॥ॐ अग्र य नम॥ॐ यता मा द
 ॥ॐ अग्नि दृ ती॥ॐ यत्रा य॥ॐ ला जा लं॥ॐ त मी गान॥ॐ वि त था य॥ॐ ला
 जा लं॥ॐ यरु य वि उ म चि ख्य ॥ॐ अग्र य ॥ॐ क सि॥ॐ अग्नि र्म
 दा॥ॐ यमा य नम॥ॐ यन क॥ॐ यम न द हं॥ॐ गन्धार्वा य॥ॐ गन्ध॥ॐ
 व स य म व स ति य म॥ॐ ग य ॥ॐ य ग जि द्वा॥ॐ यरु ता ना म धि॥
 म ग य॥ॐ नी ल ह्य द्वा॥ॐ ॐ मं म गं ॥ॐ यत द कि ल या॥॥ॐ ने म
 या य नम॥ॐ ति नान॥ॐ य न द वी॥ॐ न दि ने ॥ॐ ख य ॥ॐ ना रि
 ॐ वि रू वि लान या य म्मे य वि ति रु स त॥ॐ आ न न द न दा वा ॥ॐ भ रू ग
 १ सो हा र्म य स॥ॐ जं घा र्म य द र्म य म्मे वि मि त्रा जा य ति चि त ॥

2

थर्मुं स्र य विज न न्या व क म ढ व ॥ इति वा मु या ग र्व न रु मि साः
 धन वि धि १ समा क ॥ ॥ अथ दि व सा न क म न या द सा य नी ॥
 य ज मा न र्थ य श हा ज न ॥ वा क्त व र्थ य रु या य वि धि र्थ ॥ क ल र्थ य
 ति श्वा ॥ र्थ खा कृ ति ॥ अ ८ र्थि ग ल या व मू ट या २० स्ना न या य रु या न
 र्थि र्थ क लि स ॥ य श म त ॥ व द ॥ लुं य य १ य धि या मि त्या दि ३ ॥ अ
 र्थ या ज न हा य ॥ व द ॥ लुं स मि ति या न ॥ य व ग य न हा य ॥ लुं य विः
 उ श्वा ॥ य ज मा न न ऊ न र्थ म वु य ज न ॥ वा क्त व र्थ ला सा ला व स्व
 रि वा च न य ० ॥ अ मि क वु या य र्थ स स्व रि क स त ॥ अ ट यि या धा
 य न र्थ ॥ वा ग्ग ३ ॥ ला च न क धि य १० ॥ सि ज ल ग ड् वा ग्ग ३
 ॥ य श वा स र्थ न ॥ य व ती र्थ ज ल ॥ सा द द ॥ हा य स्ना न दा रु ल ॥ अ रु

५३
 क न य न ना द्वि त धा न या ॥ १०८ ॥ नि वि ष १ या दू र व १ क र्त्ता १ ना क्ता १ (य क्
 ना ग न १ ॥ व र्जः य स्य वि रि ना ला मः स र्व न स्य नि था ज य न ॥ १०९ ॥ आ वाः
 र्थ १ य ध र्म यू षा ग जा श्र व र्का व ने १ ना व पि त्वा म हा दा ने न स रुः
 ल क मा य य न ॥ ११० ॥ स लि ग म दू र्ति क य श्र य (थ क र्त्ता य रु द द (हो
 र्थ यू षा वा द्वा षाः स र्व न न मु र्थि नि द व ना ॥ १११ ॥ य य स्त्री नी व व द्वाः
 नु वि धि र्थ र व मु नि र्म ल १ व क न न्ना न कू र्त्ता व स म य वा य की व र्ण ॥
 ॥ ११२ ॥ जी व यी न व मु य र्म १ उ क (श्र व ना श्र भ व व ॥ के षा (गो र्म द वाः
 व ड् य स ना ज व ना रु व ॥ ११३ ॥ क रु मा ना या य र्थ द र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ
 नी ॥ नि व र्था द्वा दि न य द क र्त्ता र्थ स य वि य र्थ ॥ ११४ ॥ आ दा य नू ड क
 ल र्ग दि ज सा र्थ न ना ग न १ उ ज्ज य वा न्ना न स क्ता न क ल म (ध र्म य स्र व

॥११॥ उद्धृत्वा हृत्पत्रं च नय पूर्वसकलवर्क। आधादिष्टाविलिप्तं
यत्तु नृपः यत्तु वा नृपः ॥१॥॥॥ आध्याययत्तु नृपः ॥१॥॥॥ दमाधय
ननुमाधयत्तु नृपः ॥१॥॥॥ कुर्यादसिधकं पूनयूनः ॥१॥॥॥ अकाध
वनाः सर्वावका विष्मदं श्वजाः ॥ सजात्वा दिमलिवन्मुपयत्तु
कुधनानिवा ॥१॥॥॥ नाजायत्तु नृपः ॥१॥॥॥ अथागं कर्षत्तु नृपः
यद्युत्तु नृपः ॥१॥॥॥ अदिवत्तु नृपः ॥१॥॥॥ आदिष्टाविलिप्तं
नृदाविष्टाविलिप्तं ॥१॥॥॥ अथागं कर्षत्तु नृपः ॥१॥॥॥
यत्तु नृपः ॥१॥॥॥ अथागं कर्षत्तु नृपः ॥१॥॥॥
सर्वेनयः सागत्रयधृत्वा ॥१॥॥॥ अथागं कर्षत्तु नृपः ॥१॥॥॥
मा। वृत्तकथादिका वा न्याः कथसर्वाः ॥१॥॥॥ अथागं कर्षत्तु नृपः ॥१॥॥॥

७३

अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
नृका। नृका। नृका। नृका। नृका। नृका। नृका। नृका। नृका। नृका।
पूजा ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
गिष्ठा ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
यनक ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
दिगादिगर्भय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
वाहिल्यत्तु नृपः ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
वाक् ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
वत्तु नृपः ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥
वने ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥ अथकर्माय ॥१॥॥॥

गमन॥श्रीगोविन्द॥पूर्वकण्ड॥साखिआय॥ यादस्वभविमिमां ७ ॥

१